Govt. Degree College, Bagaha-1 (W. Champaran)

Babasaheb Bhimrao Ambedkar University Muzaffarpur (Bihar)

B.A. part-1 (Hons.)

Practical

Dharmesh nanda

Assistant Professor (Guest)

Geography department

एक मानक अक्षांश वाला साधारण शंकु प्रक्षेप (Projection)

→ सभी अक्षांश रेखाएं शंकु के शीर्ष को केन्द्र मानकर खींचे गए संकेन्द्रीय (Concentric) वृत्तों के चाप होते हैं, जिनके बीच की दूरी एक समान होती है।

→ अक्षांश एवं देशांतर रेखाएं एक दूसरे को समकोण पर काटती हैं।

→ इस प्रक्षेप में ध्रुव एक चाप के रूप में होता है।

→ भू-मध्य रेखा से ध्रुव की ओर देशांतर रेखाओं के बीच की दूरी में कमी होती जाती है।

→ सिर्फ मानक अक्षांश पर ही मापनी शुद्ध होती है, अन्य अक्षांश पर नहीं।

→ सभी देशांतर रेखाओं पर मापनी शुद्ध होती है, अतः इस प्रक्षेप को समदूरस्थ शंकु प्रक्षेप भी कहा जाता है।

→ मानक अक्षांश से दूर जाने पर मापनी की अशुद्धि बढ़ती जाती है। यही कारण है कि यह 20° से अधिक अक्षांशीय विस्तार वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त नहीं होता है।

→ इस प्रक्षेप पर केवल एक ही गोलार्द्ध का मानचित्र बनाया जा सकता है।

→ मध्य अक्षांशों में स्थित छोटे-छोटे देशों के मानचित्र बनाने के लिए यह प्रक्षेप उपयुक्त होता है।

→ यह कम अक्षांशीय विस्तार वाले प्रदेशों के लिए भी उपयुक्त होता है। बाल्टिक देश, ट्रांस साइबेरियन रेलवे एवं ट्रांस कैनेडियन रेलवे के लिए यह प्रक्षेप उपयुक्त होता है।